Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 4, June-2018, ISSN 2230-7540

राजेंद्र यादव के उपन्यास साहित्य मे सामजिक चिंतन

Shashikant Kumar[1]* Dr. Ujlesh Agarwal[2]

[1] Research Scholar

[2] Assistant Professor, CMJ University, Shillong, Meghalaya

सार - ***स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य को विकास की नयी दिशा देने और गहरे अर्थों में प्रभावित करने वाले रचनाकारों में राजेन्द्र यादव का नाम विशिष्ट है। स्वतंत्रता से पूर्व एवं पश्चात् देश की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक गतिविधियों एवं परिस्थितियों में जो बदलाव आया, उसका सबसे ज्यादा प्रभाव मध्यवर्ग पर पड़ा। राजेन्द्र यादव ने इसी मध्यवर्ग को अपनी लेखनी का मूलाधार बनाया, तथापि उसकी कमजोरियों एवं विशेषताओं को यथार्थ के धरातल पर उद्घाटित किया है। उनके उपन्यासों का कथ्य जहाँ एक ओर मध्यवर्गीय जीवन में व्याप्त अन्तर्विरोधों एवं समस्याओं को उजागर करता है, वहीं दूसरी ओर गहरे उतरकर परिवेशजन्य विवशता में जीते हुए कमजोर, त्रस्त एवं उखड़े हुए व्यक्ति की वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत करता है।***

----------X----------

राजेन्द्र यादव: व्यक्तित्व तथा कृतित्व

किसी भी साहित्यकार के विचारों और आदर्शों को पूर्णतः समझने और जानने में उसका जीवन और व्यक्तित्व आधार भूमि का काम करता है। अतः मानव जीवन की दिशा निश्चित करने और उसे विशिष्ट रूपाकार देने में व्यक्ति की पैतृक, पारिवारिक, युगानुरूप, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक आदि परिस्थितियों तथा उनकी मूल प्रवृत्तियों का पर्याप्त हाथ रहता है। किसी भी साहित्यकार के व्यक्तित्व के विषय में जानने हेतु उसके जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में उसकी मूल प्रवृत्तियों व अभिरूचियों आदि के विषय में जानना आवश्यक होता है। अतः उनके साहित्य के मूल में पहँुचने से पूर्व उनके जीवन में प्रवेश करना अनिवार्य होता है। मनुष्य का व्यक्तित्व उसके जीवन का अभिन्न पक्ष होता है जिसमें से किसी एक पक्ष का अध्ययन दूसरे पक्ष के अध्ययन के अभाव में अधूरा-सा रह जाता है। साहित्यकार का कृतित्व एक ओर उसके व्यक्तित्व की प्रतिच्छाया होता है दूसरी ओर अपने समय की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक हलचलों से अनुप्राणित होता है। साहित्यकार युग दृष्टा भी होता है और युग सृष्टा भी। एक ओर वह अपने युग में होने वाले परिवर्तनों, समस्याओं आदि पर नजर रखता है तो दूसरी ओर अपने साहित्य के माध्यम से एक नये युग के निर्माण में सहायता देता है। वस्तुतः साहित्यकार के साहित्य का उद्देश्य ही क्रांति लाना होता है। इस प्रकार साहित्य के प्रति लेखक के निजी दृष्टिकोण से सम्यक् परिचय प्राप्त कर लेने से उनके साहित्य को समझने और उसका विवेचन करने में पर्याप्त सहायता मिलती है।

राजेन्द्र यादव: व्यक्तित्व

राजेन्द्र यादव हिन्दी कथा-साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। उनका नाम स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्यकारों में विशेष उल्लेखनीय है। राजेन्द्र यादव मुख्यतः सामाजिक चेतना के कथाकार हैं। उन्होंने साहित्य सृजन को स्वधर्म रूप में स्वीकार किया। अतः उन्होंने अपनी सर्जकता में अर्थ व राजनीति आदि को दृष्टि में रखकर समझौता नहीं किया। वे एक मात्र साहित्य के प्रति प्रतिबद्ध बने रहे। बाहरी दबावों से मुक्त होकर अपने लेखन को स्तरीय एवं प्रमाणिक बनाये रखने का उन्होंने सदैव प्रयत्न किया। यथार्थ एवं मानव मूल्यों की खोज के प्रति भी उनका झुकाव रहा है।

जन्म एवं बाल्यकाल

स्वातंत्र्योत्तर सुप्रसिद्ध हिन्दी लेखक राजेन्द्र यादव का जन्म 28 अगस्त सन् 1929 को उत्तर प्रदेश में आगरा के राजा मंडी मोहल्ले में हुआ था। उनके पिता श्री मिस्त्रीलाल यादव और माता ताराबाई थी। अपने दस भाई-बहनों में राजेन्द्र यादव सबसे बड़े थे। उनके जीवन का अधिकांश समय आगरा के राजा की मण्डी में व्यतीत हुआ। उनके बाल्यकाल का विवरण बहुत ही कम उपलब्ध है क्योंकि उनका विचार है कि "कलाकार का व्यक्तित्व उसका परिचय उसका विश्वास और

www.ignited.in

उसकी प्रतिबद्धता सभी कुछ उसकी कला होती है। जो वहां नहीं है, उसका महत्त्व और मूल्य क्या और क्यों हो।'' 1 राजेन्द्र यादव आरम्भ से ही मस्तमौला स्वभाव के रहे हैं। सूसीर में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे मवाना भेज दिये गये। मेरठ में अपने चाचा के यहां रहते हुए उन्होंने अपनी शिक्षा-दीक्षा प्राप्त की।

वहां सब कुछ ठीक ही चल रहा था, किन्तु अचानक 9-10 वर्ष की अवस्था में हॉकी खेलते हुए उनकी एक टांग टूट गई थी और वे विकलांग हो गये। इस विकलांगता ने उन्हें जीवन के प्रति एक नये सत्य व नए दृष्टिकोण से परिचित कराया। इसमें कोई संदेह नहीं कि इस विकलांगता के कारण उनकी शारीरिक गतिविधियां अवश्य प्रभावित हुई और अवरूद्ध भी हुई, परन्तु इस कमी को उन्होंने अपनी बौद्धिक और मानसिक गतिविधियों को बढ़ाकर पूरा किया। बाल्यावस्था के समान ही किशोरावस्था भी व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण में अपना असाधारण महत्त्व रखती है। राजेन्द्र यादव के जीवन में भी इस काल का विशेष महत्त्व रहा है। उन्होंने एक स्थान पर लिखा है ''कलाकार अपने किशोर काल में अपने यथार्थ से असंपृक्त नहीं हो पाता वह या तो उसमें रस लेता है या उसे जस्टिफाई करता है, और जिन्दगी भर कला के नाम पर आत्मकथा के टुकड़े देता रहता है।'

कबीरी अंदाज में अपने व्यक्तित्व को अपने कृतित्व में ढँूढ़ने की सलाह देने वाले, स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कथा-साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर राजेन्द्र यादव अपने या अपनी रचनाओं के संबंध में चुप्पी साधे रहना ही उचित समझते हैं। उनके मतानुसार एक ईमानदार और प्रतिबद्ध रचनाकार की रचनाएं ही उसका परिचय देने के लिए पर्याप्त है। उन्हीं के शब्दों में कहें तो, ''एक तरह देखा जाये तो सारा ईमारदार कथा-लेखन औरों के यानी पात्रों के बहाने अपनी ही बात कहता है। कहीं बात घटनाओं, वार्तालापों और चरित्रों के स्तर पर होती है तो कभी अनुभवों, स्थितियों और उनकी प्रतिक्रियाओं के रूप में कभी इन सब अवधारणाओं, आस्था और निष्ठा की शक्ल में, होता सब 'अपना' या 'आत्मकथा' ही है।

ऐसे में ''क्या ईमानदार कथा लेखक के पास ऐसा कुछ बचा रहता है कि वह अलग से 'आत्मकथा' लिख सके''4 'मुड़-मुड़के देखता हूँ के अन्तर्गत उन्होंने लिखा भी है कि 'आत्मकथा व्यक्ति की हो या संस्कृति की दोनों इस गढ़न्त से मुक्त नहीं हैं। वे स्वतन्त्र कथा- रचनायें (फिक्शन) हैं। वास्तविक नाम और स्थान कथा को विश्वसनीय बनाने की रचनात्मक तरकीबें (डिवाइस) होती है। कथा के प्रवाह में ध्यान न बटाए इसलिए कहानी और उपन्यासों में हम वास्तविक नामों, स्थानों को बदल देते हैं। वहाँ मुख्य तर्क कहानी है, आत्मकथा में मुख्य तर्क व्यक्ति है। दोनों जगह विश्वसनीयता का संकट स्थितियों-घटनाओं के चुनाव में कतर-ब्योंत करता है कभी-कभी कुछ पीढियां अगलों के लिए खाद बनती है। बीसवीं सदी के 'उत्पादन' हम सब 'खूबसूरत पैंकिग' में शायद वही खाद है। यह हताशा नहीं अपने 'सही उपयोग' का विश्वास है, भविष्य की फसल के लिए बुद्ध के अनुसार ये वे नावें हैं जिनके सहारे मैंने जिन्दगी की कुछ नदियाँ पार की हैं और सिर पर लादे फिरने की बजाय उन्हें वहीं छोड़ दिया है।'5 राजेन्द्र यादव ने व्यक्तिगत जीवन में जो देखा, सुना, भुगता, अनुभव किया उन सबको अपने लेखन का अंग बना दिया। उनका लेखन उनके जीवन से अलग प्रतीत नहीं होता।

शिक्षा-दीक्षा

राजेन्द्र यादव के पिता मिस्त्रीलाल यादव को उर्दू में रूचि थी, अतः उनकी प्राथमिक शिक्षा उर्दू में हुई। प्रेमचंद के समान ही राजेन्द्र यादव पहले उर्दू में पढ़े और बाद में हिन्दी में आए। उनकी मैट्रिक तक की शिक्षा झाँसी में अपने पिता के साथ हुई। अपनी कक्षा में वे एक बुद्धिमान छात्र माने जाते थे। छोटी उम्र में ही राजेन्द्र को पढ़ने का शौक लगा था। पढ़ना खूब पढ़ना, सामने आई हर चीज को पढ़ना उनके जीवन का अभिन्न अंग बन गया। राजेन्द्र यादव की शिक्षा एम.ए. तक हुई है। उन्होंने एम.ए. हिन्दी की परीक्षा आगरा विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी से पास की। अंग्रेजी, बंगाली, उर्दू आदि भाषाओं पर भी उनका अधिकार है। अध्ययन के समान उन्हें लेखन में भी विशेष रूचि थी। साहित्य लेखन के अतिरिक्त डायरी और पत्र वे पूरे मनोयोग से लिखते थे। डायरी लेखन का प्रभाव उनके रचनात्मक साहित्य पर देखा जा सकता है। उसके अतिरिक्त वे पत्र लेखन के काम में भी सतर्क रहते थे। साहित्य लेखन राजेन्द्र यादव के जीवन का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण विषय है।

एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण होने के उपरान्त राजेन्द्र यादव यदि चाहते तो वे सहज ही प्राध्यापक बन सकते थे। पण्डित जगन्नाथ तिवारी ने उन्हें अपने विभाग में लेना चाहा था परन्तु तब तक उन्हें लेखक के रूप में प्रसिद्धि भी मिल चुकी थी। स्वाभिमानी स्वभाव के कारण नौकरी के झंझट में पड़ना उन्हें पंसद नहीं था। फिर भी उन्होंने कुछ एक महिनों के लिए जियोजालिकल सर्वे में हिन्दी अध्यापक का काम किया था। राजेन्द्र यादव के जीवन में साहित्यिक प्रेरणा के अंकुरण तभी फूटने लगे थे जब वे 'भिक्खी चाटवालों' से तरह-तरह की

कहानियां सुना करते थे। इस प्रकार कथा कहानियों के संस्कार उनके मन पर बचपन से ही पड़े उनके बचपन का काल आजादी की लड़ाई का कला था। आजादी की लड़ाई में साहित्यकार भी अपना दायित्व निभा रहे थे। राष्ट्रकवि दिनकर भी स्वतंत्रता सेनानी को अपनी कविता के माध्यम से प्रेरित एवं उत्साहित करने का कार्य कर रहे थे। राजेन्द्र यादव उन्हें बहुत पढ़ते थे। कवि दिनकर की इन काव्य पंक्तियों ने उनके किशोर मन पर अमिट छाप छोड़ दी - 'सेनानी करो प्रयाण अभय, भावी इतिहास तुम्हारा है, ये नखत अमा के बुझते हैं, सारा आकाश तुम्हारा है।"6 इन्हीं पंक्तियों के प्रभाव स्वरूप यादवजी का 'प्रेत बोलते हैं' उपन्यास बाद में 'सारा आकाश' शीर्षक हो गया।

उपन्यासकार

राजेन्द्र यादव का उपन्यास साहित्य, हिन्दी साहित्य जगत् में अपना उल्लेखनीय स्थान रखता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय जीवन पर आधारित उनके उपन्यासों में प्रगतिवादी चिंतन धारा अपनाते हुए मध्यवर्ग का जीवन चित्रित किया गया है। राजेन्द्र यादव ने अपने अधिकतर उपन्यासों के माध्यम से मध्यवर्ग को उसकी शक्ति एवं सीमा के साथ उपस्थित किया है। मध्यम वर्गीय परिवार और व्यक्ति स्तर पर होने वाले बिखराव और टूटन को उन्होंने प्रमाणित रूप से उद्घाटित किया है। समकालीन जीवन की वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं का चित्रण इनकी कथा कृतियों की प्रमुख विशेषता है। व्यक्तिगत कुंठाओं तथा मानसिक विकृतियों की प्रतिक्रियात्मक संभावनाएं इनकी रचनाओं में प्रभावशाली रूप में अभिव्यक्त हुई हैं। उनके प्रकाशित उपन्यास निम्न हैं –

उपन्यास

1. सारा आकाश (आरम्भ में पे्रत बोलते हैं के नाम से प्रकाशित 1951) प्रथम संस्करण-सन् 1959
2. उखड़े हुए लोग - प्रथम संस्करण-1956
3. कुलटा - प्रथम संस्करण-1957
4. शह और मात - प्रथम संस्करण-1959
5. एक इंच मुस्कान (मन्नू भण्डारी के साथ) प्रथम ज्ञानोदय में सन् 1963
6. अनदेखे अनजान पुल - प्रथम संस्करण-1963
7. मंत्रविद्ध - प्रथम संस्करण-1967

उद्देश्य

1) राजेन्द्र यादव अपनी अपूर्ण रचनाओं को हमेशा दराज में बंद करके रखते हैं।

2) राजेन्द्र यादव एक बहुप्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार थे।

उपसंहार

श्सामाजिक चेतनाश् शब्द का अर्थ मात्र सामाजिक जागृति ही नहीं, वरन् प्रत्येक मानवीय समस्या पर सामूहिक दृष्टि से विचार करना है। समस्त सामाजिक विषमताओं से संबंधित नागरिक जीवन की समानतामूलक भावना ही सामाजिक चेतना है । भारतीय साहित्य में सामाजिक चेतना की कथा हजारों वर्ष पुरानी है, जिसका उल्लेख वेद, बुद्ध और वेदान्त की वाणी में भी मिलता है जहाँ समाज को नूतन ऊँचाइयों तक ले जाने का आह्वान किया गया है । उन्नीसवीं शती तक आते आते पश्चिम की जीवन-पद्धति के संपर्क से सामाजिक चेतना को नूतन आधार और आकार प्राप्त हुआ, जहाँ समाज संकीर्णता यानी व्यक्तिवादी चेतना से मुक्त होकर समष्टिवादी चेतना में प्रविष्ट होने लगा । इस शती में अनेक समाजसुधारकों के द्वारा समाज के अंधविश्वासों, अत्याचारों, सतीप्रथा, अन्याय, अनीति, शोषण आदि का विरोध, विधवाविवाह का समर्थन, बालविवाह का निषेध आदि पर गहरी चोटकर समाज को पुनर्गठित करने का प्रयास किया गया । इसी शती के अंत में स्वामी विवेकानंद जैसे महापुरुषों ने भारतीय अध्यात्मकी नूतन सार्वभौम चेतना प्रदान की और सन् १८५७ के स्वातंत्र्य-युद्ध ने राष्ट्रीय-चेतना की लहर जाग्रत की।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. यादव, राजेन्द्र; सारा आकाश, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करणः 2008, पहली आवृत्तिः 2012
2. यादव, राजेन्द्र; उखड़े हुए लोग, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, दसवाँ संस्करण:

3. यादव, राजेन्द्र; मंत्रविद्ध और कुलटा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पहला संस्करण: 1995, पहली आवृत्ति: 2004

4. यादव, राजेन्द्र; शह और मात, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण: 2005

5. यादव, राजेन्द्र; अनदेखे अनजान पुल, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण: 1998, दूसरी आवृत्ति: 2012

6. यादव, राजेन्द्र; एक इंच मुस्कान, राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली, संस्करण: 2012

7. यादव, राजेन्द्र; एक था शैलेन्द्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण: 2006, आवृत्ति: 2009

8. काजल, डॉ. अजमेर सिंह; उपन्यासकार राजेन्द्र यादव, संजय प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण: 2015

9. परदेशी, डॉ. भाउसाहेब और देवरे, शिवाजी; राजेन्द्र यादव का रचना संसार, चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर, संस्करण: प्रथम 2005

10. सिंह, त्रिभुवन; हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण: 1955

11. काजल, डॉ. अजमेर सिंह; उपन्यासकार राजेन्द्र यादव, संजय प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण: 2015

12. परदेशी, डॉ. भाउसाहेब और देवरे, शिवाजी; राजेन्द्र यादव का रचना संसार, चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर, संस्करण: प्रथम 2005

Corresponding Author

Shashikant Kumar*

Research Scholar